

Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life



VOL. 179

Founder's Essay

जब तक आपको आशा है, आप कभी भी बिचलित नहीं होंगे

पुण्डरीक सूत्र का सातवाँ परिवर्त: “माया नगर का दृष्टांत,” में यात्रियों के एक समूह की कहानी है, जो दुर्लभ खजाने से भरा पर्वत की खोज में लम्बे, दुरूह मार्ग से गुजरना पड़ता है। यात्रा में एक निश्चित बिंदु पर मार्गदर्शक सड़क पर थोड़ा आगे एक माया नगर का निर्माण करता है और कारवाँ के थके हारे सदस्यों को विश्वास दिलाता है कि वहाँ आराम एवं तरोताजा होने के सभी साधन उपलब्ध हैं।

इसके विपरीत, यदि कोई नेता मण्डली के सदस्यों को केवल इस प्रकार झिड़कता है, (“आगे का मार्ग कठिन है! आप इसे इस गति से कैसे तय कर पायेंगे?”) तो कोई भी उनका अनुसरण करने के लिए तैयार नहीं होगा। एक नेता हमेशा सौ प्रतिशत निश्चित अन्दाज नहीं करेगा कि आगे क्या है, लेकिन महत्वपूर्ण है, जिस आत्मविश्वास के साथ नेता समूह के लक्ष्य की ओर इसे कैसे प्राप्त करेंगे, इसकी घोषणा करता है। कुछ ऐसा कहकर उनकी रैली करता है, “चलो

आगे बढ़ते हैं, इस तरफ! यह निश्चित रूप से भविष्य का वह मार्ग है, जिसकी हम स्वयं कल्पना करते हैं।”

मुश्किलें आपका इंतजार करती हैं। अपने भावी सपनों को साकार करने के प्रयास में, ऐसे समय आयेंगे, जब आपको असुविधाओं के सामने स्वयं छोड़ देने की इच्छा होगी - इस अवसर पर कभी आपको जीवन में चक्करदार मार्ग लेने के लिए भी मजबूर होना पड़ेगा। लेकिन अगर आपका कोई लक्ष्य या स्वप्न है, जिसे आप साकार करना चाहते हैं, तो आप उन कठिनाइयों को सहने, उन्हें स्वीकार करने और उन्हें दूर करने का साहस होना चाहिए।

जैसा कि कहा जाता है, “जब तक आपको आशा है, आप कभी भी मार्ग से बिचलित नहीं होंगे। जो लोग आशा में जीते हैं, वे कभी बृद्ध नहीं होंगे।”

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी. 200-201

Living the Lotus Vol. 179 (August 2020)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुसरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

उद्देश्य के बिना कुछ भी नहीं है

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिशो कोसेइ काइ



अध्यवसाय हमें बुद्ध बनने पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायक है

अगले दिन किसी ने मुझसे पूछा, “बुद्ध बनने के लिए मुझे क्या करने की आवश्यकता है? किस तरह का अभ्यास या योजना सबसे अच्छी है?” चूँकि बौद्ध धर्म को कभी-कभी “बुद्ध बनने की धर्मदेशना” के रूप में समझाया जाता है, इसलिए यह प्रश्न प्रतीत होता है कि “हमें उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?”

हालाँकि, जब हम पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त-16 में, “तथागत का शाश्वत जीवन” पर गहराई से मनन चिन्तन करते हैं, तो हम पाते हैं कि हमारा परिश्रम बुद्ध बनने के लिए नहीं है। इसलिए, ऐसा पूछने वाले व्यक्ति के उत्तर में, मैंने निम्नलिखित बातें कहीं:

“बुद्ध बनने को 'जागृत होने' के रूप में परिभाषित किया जाता है,” लेकिन इस अर्थ में हमने सिखाया है कि हम पूर्व से ही जागृत हैं। इसलिए, यह कहने के बजाय कि हम एक विशेष अभ्यास में लगे हैं या बुद्ध बनने की योजना बना रहे हैं, हमें वास्तव में कहना चाहिए कि जागृत होने के बाद, हम जिस तरह से अपने दैनिक जीवन का नेतृत्व करते हैं, उसके माध्यम से परिश्रम करना जारी रखें हैं।”

हम लगातार परिश्रम करते रहते हैं, क्योंकि हम कभी-कभी अपने मूल स्वभाव को भूल जाते हैं। अपने जागृत, सच्चे स्वयं में लौटने के इस प्रयास को, अपने आप में, एक दिन से अगले दिन तक विश्वास को जीना है।

जीवन विभिन्न चिंताओं और कष्टों से भरा है, लेकिन जब हम अपने स्व की जागृत अवस्था पर और अन्य के स्व की जागृत अवस्था पर विश्वास करते हैं और एक साथ अध्यवसायी होते हैं, तो यह लोक अपने वर्तमान रूप में प्रशान्त प्रकाश से देदीप्यमान क्षेत्र बन जायेगा। केवल बुद्ध की ऐसी धर्मदेशना का सामना करने और इस तरह के जीवन की अनमोलता से अवगत होने के बाद ही हम प्रत्येक दिन कृतज्ञतापूर्वक जी सकते हैं। दुर्भाग्य से, हालाँकि, हम कभी-कभी अपने स्वानन्द को भूल जाते हैं और दुःख पाते हैं।





जैसे कि यह आपका अपना था

“तथागत का शाश्वत जीवन” में एक पंक्ति है, जो इस प्रकार है: “तथागत द्वारा प्रतिपादित सूत्र जीवित प्राणियों को मुक्त करने के उद्देश्य से है।” दूसरे शब्दों में, बुद्ध के सभी उपदेश लोगों को भ्रान्तियों से मुक्त कराने के लिए है।

जीवित प्राणियों को भ्रान्तियों से मुक्त कराना मुश्किल लग सकता है, लेकिन इसका सीधा अर्थ है कि हमें ऐसा मानव प्राणी बनने की आवश्यकता है, जो सदा और हृदय से - हर्षित, आनंदित और सुखी है। जब तक हम अपने मूल स्वभाव को नहीं भूलते, तब तक हम ऐसी खुशी का अनुभव कर सकते हैं।

इस संबंध में, बुद्ध का हमें संकेत है कि विभिन्न रूपों में या विभिन्न चीजों के माध्यम से, कैसे हम स्वयं को भ्रान्तियों से दूर रह सकते हैं। सूत्र हमें बताता है कि युक्तियुक्त उपाय असंख्य हैं, लेकिन यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि ये न केवल संतों और विद्वानों का माध्यम है, बल्कि लोक में होने वाली सभी अलग-अलग घटनायें - अच्छे और बुरे हैं, संकेत, कारण, या परिस्थितियाँ बन जाती हैं, जो हमें अपने सच्चे जीवन में वापस आने और खुशी का अनुभव करने में सहायता करते हैं।

कुछ लोग चोट या बीमारी से अपने सच्चे स्वयं के बारे में जागृत हो सकते हैं, जबकि अन्य जागृत हो सकते हैं, जब वे पहले किसी और के दर्द को अनुभव करने लग जाते हैं और उनमें करुणा का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसके अतिरिक्त, यदि आप किसी अन्य व्यक्ति की खुशी को देखते हैं और स्वयं इतनी खुशी का अनुभव करते हैं - जैसे कि यह आपकी अपनी है और आप को खुशी के आँसू आ जाते हैं। यह संभवतः इसलिए है कि आपका बुद्ध-स्वभाव स्वयं प्रकट हो रहा है।

बुद्ध चाहते हैं कि सभी लोग मुक्त हो जाएं और खुश रहें। दूसरे लोगों के दुःख और सुख को अपने स्वयं के रूप में स्वीकार करने के अभ्यास के साथ, हमें यह बोध होना चाहिए कि बुद्ध की इच्छा हमारे मन में गहरे पैठ चुका है।

वैश्विक घटनाएँ जैसे कि COVID-19 का प्रसार हमें कई चीजें सिखाता है। यदि हम इस तरह की घटनाओं को स्वीकार करते हैं और उनसे सीखते हैं। इस लोक में कुछ भी उद्देश्य के बिना नहीं है और हर एक चीज हमें जागृत सच्चे स्वयं को लौटने में सहायता करती है - दूसरे शब्दों में, बुद्ध को।

एक तरफ, जो लोग संसार भर के लोगों की खुशी के लिए प्रार्थना करते हैं और दूर देशों में लोगों के बारे में सोचने के लिए बोलने के लिए स्वयं की जिम्मेदारी मान लेते हैं, ये एक वैश्विक संगठन के सदस्य हैं, जो सभी समान इच्छा रखते हैं।

अपने और दूसरों के बुद्ध-स्वभाव में विश्वास करते हैं, यह हमारा भक्ति से भरा मन - दूसरे शब्दों में, हमारा धार्मिक विश्वास - दुनिया भर में सच्ची खुशी फैलाने के लिए शुरुआती बिंदु बनता है।

* “दूसरों का स्वयं” (जेपीएन, ताको) का अर्थ है “अन्य लोग और सभी सत्तावान प्राणी।” यह वाक्यांश जेन के सोतो स्कूल के संस्थापक दोगेन की शोबोगेन्जो (सच्चे धर्म चक्षु का कोष) में दिखाई देता है। दोगेन ने सिखाया है कि जब हम स्वयं को और दूसरों को एक के रूप में देखते हैं, तो स्वयं के बाहर सत्तावान सब कुछ “दूसरों का स्वयं” है, जो “एक के स्वयं के साथ” एकजुट होता है।

From Kosei, August 2020





समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें



सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र

अध्याय 17: गुण की विशिष्टता (1)



पिछले अध्याय ने इस सिद्धांत को स्थापित किया है कि बुद्ध की परम सत्ता शाश्वत आदि बुद्ध हैं, जो ब्रह्मांड में सभी पदार्थों की सत्ता के कारण हैं और हम सभी के अन्दर और चारों ओर विद्यमान एक चिरस्थायी उपस्थिति है। वर्तमान अध्याय इस सत्य को जानने के गुणों की चर्चा करता है और सच्चे विश्वास के साथ जीने के तरीके को बारह चरणों में विभाजित कर प्रदर्शित करता है।

जीवन का अर्थ जानने के महा गुण

बारह चरणों को विस्तार में गये बिना ही, इतना कहना पर्याप्त है कि यदि हम विश्वास का सार समझ लेते हैं (कि हमारा जीवन शाश्वत आदि बुद्ध के कारण है, जिनका जीवन अनन्त है), विश्वास को गहराई देने के और इसे दूसरों तक विस्तार देने की योग्यता असीम है। फिर, यदि वह विश्वास पूरी तरह से अवरोधित नहीं है, तो हमें बुद्ध के समान परम जागृत अवस्था प्राप्त करने का सर्वोच्च गुण प्रदान है।

स्पष्ट रूप से, कोई भी सामान्य अभ्यास बुद्धत्व की प्राप्ति की ओर अग्रसर नहीं करा सकता है। जैसा कि इस परिवर्त में कहा गया है, कुछ बोधिसत्त्वों ने इस अवस्था को प्राप्त करने से पहले आठ जन्मों तक अभ्यास किया। लेकिन, केवल यह जानने के लिए कि सच्चे विश्वास और सच्चे प्रयास से किसी बिंदु पर, हम शाक्यमुनि के समान स्थिति में पहुँचेंगे, क्योंकि वे हमारे स्वयं और सभी मानव प्राणियों के लिए प्रकाश के विशाल स्रोत है। इस प्रकाश के साथ, प्रत्येक मानव प्राणी का जीवन सार्थक और आनन्दमय होता है।

लोग पैसा कमाते हैं या खो देते हैं; वे प्यार में पड़ जाते हैं और दूर भी हो जाते हैं। छोटी सी गलती के कारण वे लंबे समय से प्रत्याशित नौकरी खो सकते हैं। यदि हम इस तरह से जीवन से गुजरते हैं, तो केवल खुशी और दुःख के इन क्षणों को व्यर्थ में दोहराते हैं, भले ही प्रत्येक क्षण कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न लगे, हमें अपनी मृत्यु के समय यह एहसास होगा कि हमारा जीवन एक संकीर्ण अहंभाव में बह गया है, जो परछाइयों का पीछा करता रहा है। जब हम अपने जीवन की ओर देखते हैं, तो हम निश्चित रूप से शून्यता का एक अप्रभावी अनुभव करेंगे।

हालाँकि, यह कैसा पूरी तरह से अलग जीवन है, जिसमें विश्वास की एक मजबूत रीढ़ है - भले ही सतह पर आवर्ती दुःख दर्द और खुशियों के व्यर्थ जीवन से अलग नहीं लगता है। इस रीढ़ की हड्डी के साथ, यदि ह्य आश्वस्त हैं कि बुद्ध की स्थिति की ओर आगे बढ़ रहे हैं, चाहे जो भी उतार-चढ़ाव हो, यहाँ तक कि सबसे दर्दनाक जीवन को सुखद ढंग से जीया जा सकता है और खुशी से समाप्त किया जा सकता है।

इस जीवन के साथ, हमारा जीवनचक्र रुक नहीं जाता है। यदि हमें अपने दैनिक जीवन की विभिन्न घटनाओं की पुनरावृत्ति का पूर्वज्ञान हो सकता है - कुछ भी नहीं, मात्र आने वाले प्रत्येक जीवन में बार-बार होने वाले सुखों और दुःखों, और हमारा पुनर्जन्म मानव लोक से दूर दुर्भाग्य से नर्क में या पशु योनि में होता है - हम इस तरह के धूमिल संभावना के विचार से हतोत्साहित हो जाएँगे। लेकिन सच्चा विश्वास और जागरूकता के साथ हर कदम हमें बुद्ध की स्थिति के बहुत करीब लाता है, यात्रा, चाहे कितनी भी लंबी हो, हमेशा रुचि, आशा और पूर्णता से भरी होती है। यह वास्तव में सच्चे विश्वास से प्राप्त महागुण है।

फिर भी, सच्चा विश्वास करनेवाले का प्रयास स्वयं के साथ





समाप्त नहीं हो जाता है, जबकि उनका प्रयास बुद्ध की स्थिति की ओर होता है, वे हर किसी को उस मार्ग पर लाने का प्रयास करते हैं। सच्चा विश्वास करनेवाले लोग जितनी अधिक संख्या में बढ़ते हैं, सारी मानवता उतनी ही उन्नत होती है और यह लोक अनन्त प्रशान्त प्रकाश से देदीप्यमान आदर्श क्षेत्र के समान हो जायेगा। सबका सारांश है कि इस अध्याय में बताई गई सभी खूबियाँ इस बिंदु में सिमट जाती हैं।

सूत्र के समापन भाग में विवेचित गुण

पुण्डरीक सूत्र समापन परिवर्त-17 के अंतिम भाग से परिवर्त-28 के अंत तक चलता है। इस भाग के मुख्य विषय सच्चे विश्वास के गुण, सच्चे विश्वास के लिए आवश्यक मन की स्थिति, और शाक्यमुनि का मुझे और अन्य सभी शिष्यों को निर्देश है कि भावी पीढ़ियों में सच्चा विश्वास जगाने की शिक्षा देना है।

वर्तमान परिवर्त: “गुणों की विशिष्टता,” स्वात्म के गुणों की व्याख्या करता है, और यह अगले परिवर्त के पहले भाग में चलता है और आगे के परिवर्त: “पुण्यपर्याय,” के अंतिम अर्धभाग में व्यक्तिगत मामलों और दैनिक जीवन में प्रकट होने वाले गुणों पर चर्चा का आरंभ होता है।

कुछ लोगों के विचार में, हमें सूत्र के समापन भाग में विवेचित गुणों पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। वे सोचते हैं कि जब तक हम “एक परिवर्त एवं दो अर्ध भागों” (परिवर्त-16, “तथागत का शाश्वत जीवन,” और इसके तुरंत पहले और बाद के परिवर्तों के दो अर्ध भागों) की देशना को अच्छी तरह से समझ लेते हैं, और बुद्ध के शाश्वत जीवन और इस तथ्य में कि हमें शाश्वत आदि बुद्ध के साथ एकीभूत होने में दृढ़ विश्वास नहीं है, हम बाकी की उपेक्षा कर सकते हैं। निश्चित रूप से जो कोई भी ऐसा कर सकता है, वह सराहनीय है। लेकिन पूर्ण विश्वास प्राप्त करना कठिन है - कुछ का मानना है कि दस हजार में केवल एक व्यक्ति, या लाख में केवल एक व्यक्ति इसे प्राप्त कर सकता है।

यह आदर्श स्थिति आम लोगों की वास्तविकता से इतनी दूर हो गई है कि जब वे पहली बार इसके बारे में सीखते हैं तो यह उनके लिए बिल्कुल अलग सा लगता है। लेकिन, जैसा कि कोई उम्मीद कर सकता है, अगर इस आदर्श को लोगों के दैनिक जीवन में परिचित समस्याओं के दृष्टिकोण से समझाया जाता है, तो वे शिक्षाओं का एक ज्वलंत अर्थ प्राप्त कर सकते हैं। इसमें पुण्डरीक सूत्र के समापन भाग का प्राथमिक महत्व निहित है।

साधारण लोग भी सुस्त पड़ जाते हैं। यहाँ तक कि जब वे देशना के मूल्य के बारे में पूरी तरह से जानते हैं, वे जल्द ही अपने अभ्यास के बारे में उदासीन हो सकते हैं यदि उनके पास केवल इसके गुण की बौद्धिक समझ है। हालाँकि, अगर लोग लगातार सूत्र पढ़ते हैं और सुनते हैं, जो सिखाता है कि वे वास्तव में सही विश्वास होने से और इसे अभ्यास में डालकर स्वयं को सुधार सकते हैं, तो उनके विश्वास का लगातार नवीनीकरण होगा और कभी भी उदासीन होने की प्रवृत्ति को मार्ग नहीं मिलेगा। यह सूत्र के समापन भाग का दूसरा उद्देश्य है।

अंत में, शाक्यमुनि ने विशेष रूप से अपने समान लोगों को अपनी देशना के प्रचार प्रसार का भार दिया। उनके प्रति आभार प्रकट करने के लिए हर बार जब हम उसके शब्दों को सुनते हैं और उसके विचारों में सुनते हैं, तो हम उद्वेलित हो जाते हैं और अवर्णनीय उत्साह से भर जाते हैं। यह सूत्र के समापन भाग का तीसरा उद्देश्य है।

और इसलिए, हममें से अधिकांश सामान्य लोग हैं, उनके लिए पुण्डरीक सूत्र का समापन भाग अपरिहार्य है। इसलिए, इसे मुख्य भाग के रूप में हमें समान उत्साह और विनम्रता के साथ अध्ययन करना चाहिए।

आगे जारी रहेगा

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्रः प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.170-76.



हर चीज से सीख

कोविद-19 के प्रसार के बाद घर में रहना हम में से कई लोगों के लिए जीवन का एक तरीका बन गया है। मुझे उम्मीद है कि हर कोई सुरक्षित और कुशल है।

इस महीने के अपने संदेश में, प्रेसिडेंट निचिको निवानो ने मानसिकता की व्याख्या में कहा है कि उद्देश्य के बिना, लोक में कुछ भी नहीं है, जिसमें महामारी जैसी घटनाएँ भी शामिल हैं। वे बताते हैं कि हमारे दैनिक जीवन में मेहनती होना बुद्ध बनने के लिए नहीं, बल्कि अपने जागृत "सच्चे स्वयं" के लिए एक अभ्यास है।

उनका कहना है कि यद्यपि हमारा जीवन चिंता और पीड़ा से भरा हुआ है, लेकिन जो भी घटनाएँ घटित होती हैं, अच्छी और बुरी दोनों - संकेत, कारण या स्थितियाँ हैं, जो हमें हमारे आवश्यक स्वभाव में लौटने में सहायता करती हैं।

इस महीने, मुझे आशा है कि हम में से हर कोई दैनिक जीवन में खुशी पाने के अपने प्रयासों को जारी रखेगा। जो हमारे सामने मार्ग में आता है, उसे स्वीकार करने और उससे सीखने के भाव से खुशी मिलती है।

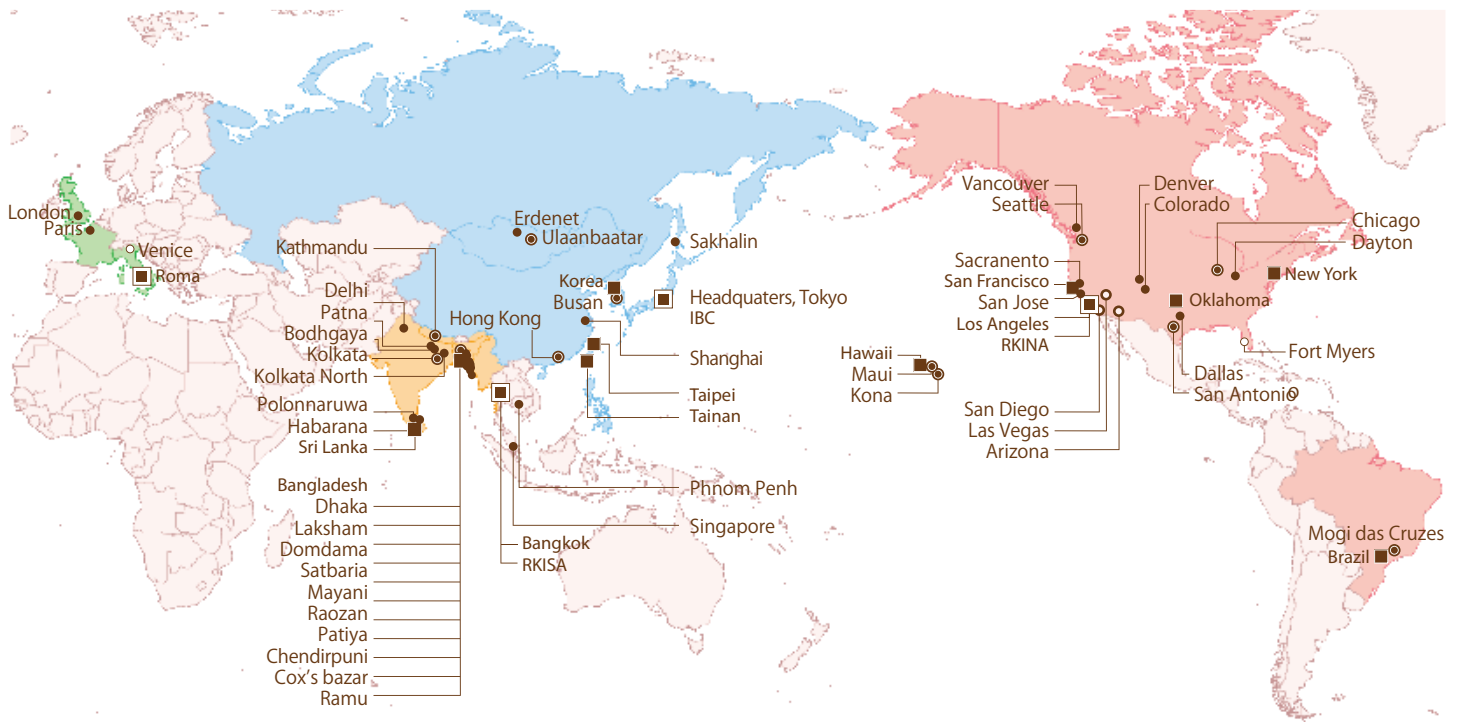
रेव. कोइची साइतो

निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल





Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633
Email: sangha@rkhawaii.org URL: <http://www.rkhawaii.org>

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
POBox 33636, CA 90033, USA
TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
Email: rk-la@sbcglobal.net URL: <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
TEL: 1-650-359-6951 Email: info@rksf.org
URL: <http://www.rksf.org>

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco

- Rissho Kosei-kai of Sacramento**
- Rissho Kosei-kai of San Jose**

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: <http://rk-ny.org>

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
TEL: 1-773-842-5654
Email: murakami4838@aol.com URL: <http://rkchi.org>

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

URL: <http://www.rkftmyersbuddhism.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
Email: rkokdc@gmail.com URL: <http://www.rkok-dharmacenter.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
URL: <http://www.rkina-dayton.com>

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-262-4437
Email: info@rkina.org URL: <http://www.rkina.org>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
(Mail) POBox 692042, San Antonio, TX 78269, USA
TEL: 1-210-561-7991 FAX: 1-210-696-7745
Email: dharmasanantonio@gmail.com
URL: <http://www.rkina.org/sanantonio.html>

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
TEL: 1-253-945-0024 FAX: 1-253-945-0261
Email: rkseattlewashington@gmail.com
URL: <http://buddhistlearningcenter.org>

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Please contact RKINA

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
Email: risho@rkk.org.br URL: <http://www.rkk.org.br>

Facebook: <https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil>
Instagram: <https://www.instagram.com/rkkbrasil>

Risho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓國立正佼成會

〒 04420 大韓民國 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓國立正佼成會釜山支部

〒 48460 大韓民國釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會

台灣台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大廈 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會

台灣台南市崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059, West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Rissho Kosei-kai of Central Delhi

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Bangkok

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL/FAX: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai Mayani

Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Damdama

Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Patiya

China Clinic, Patiya Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Satbaria

Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chendhirpuni,

Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka

408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Laksham

Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar

Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

Rissho Kosei-kai Raozan

Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Buddiyskiy khram "Lotos"

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoro-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia

(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Paris

Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)

166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: <http://www.ibrk-rk.org>